रिकार्ड:- ओम नमो शिवाय:....   ओम शान्ति   प्रातःक्लास   6-7-67

पहले-2 बाप बच्चों को सावधानी देते है कि यहाँ बैठे हो तो अपने को आत्मा समझ कर बैठो। बाप के आगे बैठे हो। टीचर के आगे भी गुरु के आगे भी बैठे हो। नम्बरवन बात है कि हम आत्मा है। बाप भी आत्मा है। टीचर भी आत्मा है। गुरु भी आत्मा है।एक ही है नाँ। यह नई बात तुम सुनते हो। तुम कहेंगे बाबा हम तो कल्प-2 यह सुनते है। तो बुधी मे यह याद रहे। बाप पढाते है। हम आत्मायें इन आँरगन्स दवारा सुनती है। यह ज्ञान तुम बच्चो को यहाँ ही मिलता है ऊँच ते ऊँच बाप दवारा। वो सब आत्माओं का बाप है। जो वर्सा देते है।(क्या ज्ञान देते है)(सबकी सदगति करते है माना घर ले जाते है।/ कितनो को ले जावेंगे यह भी तुम्ही जानते हो। मच्छरो सदृश सब आत्माओं को तो जाना ही है। सतयुग मे एक ही धर्म सुख शान्ति पवित्रता होता है। तुम बच्चो को चित्र पर समझाना बहुत सहज है।भल चित्र नही हो तो भी तुम समझा सकते हो। नक्शे पर समझाया जाता है नाँ यहाँ इंगलैंड यहाँ यह है। फिर वो याद पड जाता है। यह भी ऐसा है। ऐक-2 स्टुडण्ट को समझाना होता है। महिमा भी एक की ही है शिवाय: नम:। ऊँच ते ऊँच भगवान है नाँ। रचता बाप घर का बडा होता है नी। वो हद का यह बेहद का। यह तो है सारे बेहद के घर का बाप। यह फिर टीचर भी है तुमको पढाते है। तो तुम बच्चो को बहुत खुशी रहनी चाहिये।तुम तो स्टुडण्टस भी बडे रायल हो। बाप कहते है कि मै साधारण तन मे आता हूँ। प्रजापिता ब्रहमा भी तो जरूर यहाँ ही चाहिये। उन बिना तो काम भी कैसे= कैसे चल सकेगा! और जरूर बुर्जुग ही चाहिये नाँ! क्योंकि ऐडाप्टेशन है नाँ।(तो बुर्जुग चाहिये।कृष्ण का नाम रांग हो जाता है। फिचर्स भी हर एक जन्म-2 के अलग-2 होते है। ब्रहमा बदल नही सकते है। बुर्जुग शिव पिता भी है।/ बच्चे को थोडेई कोई बाबा कहेंगे। तो बच्चो को यही बुधी मे रहना चाहिये कि हम किसके आगे बैठे है।अन्दर मे खुशी भी होनी चाहिये। स्टुडण्टस को कही पर भी बैठे होंगे तो उनकी बुधी मे तो बाप की भी याद आती है तो टीचर की भी याद आती है। उनका तो बाप अलग, टीचर अलग होता है। तुम्हारा तो एक है बाप टीचर गुरु है।यह भी तो(बाबा) स्टुडण्ट है। पढ रहे है। सिर्फ लोन पर शरीर दिया हुआ है। और कोई फर्क नही है। बाकी तो तुम्हारे मुआफिक ही है।इनकी आत्मा भी वही समझती है जो तुम समझते हो। बलिहारी है ही एक की। उनको ही प्रभु ईश्वर कहते है। दूसरे कोई देहधारी को नही कहा जा सकता है। इस ब्रहमा को भी याद नही करना है।यह भी कहते है कि अपने को आत्मा समझ मुझ परमात्मा को याद करो। बाकी सभी सूक्ष्म वां स्थूल सभी देहधारियों को भूल जाओ। तुम शान्ति धामके रहने वाले हो। तुम हो बेहद के पटधारी है। यह बाते और कोई भी नही जानते है। दुनियाँ भर मे किसीको पता नही है। यहाँ जो आते है वो समझते जाते है और बाप की सर्विस मे लगते जाते है। ईश्वरिय खिजमतगार ठहरे नाँ। बाप भी आये है खिजमतके लिए। पतितो को पावन बनाने की खिजमत करते है।राज्य गवाया है फिर जब अभी दुःखी
** * * * * * * * *********************** **
हुये तो है तो फिर बाप को बुलाया है। जिससे राज्य लिया है उनको ही बुलावेंगे नाँ। तुम बच्चे तो जानते हो कि बाप हमको सुखधाम का मालिक बनाने आये है। दुनियाँ मे यह किसको भी पता नही है। है तो सभी भारतवासी एक ही धर्म के। यह है ही सुखधाम। सो जरूर जब नही हो तब तो बाप आकर स्थापन करे।बच्चे समझते है कि भगवान जिनको सारी दुनियाँ अल्लाह= अल्लाह और गाड कह कर पुकारती है वो ही यहाँ पर ड्रामा अनुसार कल्प पहले मुआफिक आये है।यह है ही गीता का ऐपीसोड। जिसमे बाप आकर स्थापना करते है। गाया भी जाता है ब्राहमण और देवी देवता।क्षत्री नही कहते है। ब्राहमण देवी देवतायनम: कहते है। क्योंकि क्षत्री तो फिर भी दो कलायें कम हो गये नाँ।स्वर्ग कहा ही जाता है नई दुनियाँ को।त्रेता को नई दुनियाँ थोडेई कहेंगे।पहले-2 सतयुग मे है एकदम नई दुनियाँ यह है पुराने ते पुरानी दुनियाँ। फिर नेय तो नई दुनियाँ हो जावेगी। हम अभी नई दुनियाँ मे जाते है। तभी तो बच्चे कहते है हम नर से नारायण बनते है। कथा भी हम तो सत्यनारायण की ही सुनते है।

राम की कथा तो दुर्दशा की लिख दी है। राम कौन बनना चाहेगा जिसकी सीता चुराई गई। अभी तुम समझते हो कि ऐसे कुछ भी है नही? परन्तु ग्लानी तो कर दी है नां। ल-न की तो कब ग्लानी नही करते है। इसलिये नाम ही है सत्य नारायण की कथा। नर से नारायण बनने की कथा। प्रिन्स बनने की कथा नही कहते है। सत्य नारायण की कथा है। परन्तु मनुष्य समझ नही सकते है। वो नारायण को अलग समझते है। परन्तु नारायण की कोई जीवन कहानी तो है नही। ज्ञान की बाते तो बहुत है नां। इसलिये है सात रोज दिये जाते है। रोज भठी मे रहना पडे। परन्तु ऐसे भी नही यहां आकर भठी मे रहना है। ऐसे तो फिर भठी का बाहना करके बहुत ढेर आ जावे। पढाई सवेरे और शाम को होती है। दुपहर मे वायुमण्डल ठीक नही होता है। रात्री का भी 10-से -12 तक बिलकुल खराब समय होता है। उसी समय जैसे कि विषय म वैतरणी मे बहते है। आजकल तो ना रात नां दिन देखते है। पूरा वैशाल्य है। इनको कहा ही जाता है कामी कुते। इस समय तमोप्रधानता है नां। यहां तुम बच्चो को यह मेहनत करनी है याद मे रह स सतोप्रधान बनने की। वहां पर तो सारा दिन काम मे ही रहते है। ऐसे भी बहुत होते है जो धन्धा आद करते भी है फिर पढते भी है। जास्ती अच्छी नौकरी करने के लिये। यहां पर भी तुम पढते हो तो टीचर को याद करना पडे। जो पढाते है। अच्छा टीचर समझ कर ही याद करो तो भी तीनो इकठे याद आ जाते है। बाप टीचर गुरू तुम्हारे लिये तो बहुत सहज है। नई बात तो झट याद आनी चाहिये। यह हमारा बाबा बाप भी है टीचर भी है गुरू भी है। ऊंच ते ऊंच बाप है जिससे हम स्वर्ग का वर्सा ले रहे है। हम तो स्वर्ग मे जरूर जावेंगे। स्वर्ग की स्थापना जरूर होनी है। तुम पुरूषार्थ सिर्फ करते हो। ऊंच पद पाने लिये। यह भी तुम जानते हो। मनुष्यों को भी पता पडेगा। तुम्हारा आवाज फैलता रेहगा। तुम श्रीमत पर कितना ऊंच काम कर रहे हो। तुम्हारी जैसी आलौकिक ऊंच सर्विस कोई कर नही सके। बाप भी आलौकिक सर्विस करते है तुम भी आलौकिक सर्विस करते हो। यह ब्राह्मणों का धर्म है आलौकिक धर्म। बहुत थोडे समय के लिये। तुम भी एक2 आलौकिक हो। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार तुम आलौकिक काम करते हो जो कि दुसरा कोई कर नही सके। तुम ब्राह्मण धर्म वाले ही ऐसा काम करते हो। तो इसी काम मे लग जाना चाहिये ही बिजी रहना चाहिये। बाप भी तो बिजी रहते है नां। तुम तो राज धानी स्थापन कर रहे हो। वो तो पंचायत मिल कर सिर्फ पालना करती है। यहां तुम गुप्त वेश मे क्या कर रहे हो? तुम हो इनकॉगनिटो। आननोन वारीयर्स। नानवायोलेन्स इसका अर्थ भी कोई नही समझते है। तुम हो डबल अहिंसक सैना। बडी हिंसा तो यही विकार की है जो पतित बनाती है। इनको ही जीतना है। भगवानोवाच्य् काम महाशत्रु है। इन पर ही जीत पाने पर तुम जगत जीत बनेंगे। मनुष्य इन बातो को समझ नही सकते। यह ल-न जगत जीत है नां। भारत जगतजीत था। यह विश्व के मालिक कैसे बने। यह भी बाहर वाले समझ नही सके। इस समझने मे बुधी बडी विशाल चाहिये। बडे-2 इम्तिहान पढने वालो की विशाल बुधी होती है नां। तुम श्रीमत पर अपना राज्य स्थापन करते हो। तुम किसीको भी समझा सकते हो विश्व मे शान्ति थी नां। और कोई राज्य था नही। स्वर्ग मे अशान्ति हो नही सकती। बहिश्त को कहते ही है गार्डन आफ अल्लाह। सिर्फ बगीचा ही थोडेई होगा। मनुष्य भी तो चाहिये नां। अभी तुम बच्चे समझते हो हम बहिश्त के मालिक बन रहे है। तुम बच्चो को कितना नशा रहना चाहिये। और ऊंच ख्यालात होने चाहिये। तुम बाहर की कोई भी सुख को नही चाहते हो। इस समय तुमको बिलकुल ही सिम्पल रहना है। अभी तुम ससुर घर जाती हो। यह है पियर घर। यहां पर तुमको डबल पितायें मिले है। एक निराकार ऊंच ते ऊंच। दुसरा फिर साकार। वो भी ऊंच ते ऊंच। अभी तुम ससुर घर विष्णु पुरी मे जाते हो। उनको कृष्ण पुरी नही कहेंगे। बच्चे की पुरी नही होती है। विष्णु की पुरी अर्थात ल-न की पुरी। तुम्हारा तो है ही राजयोग। तो जरूर नर से नारायण बनेंगे बाप

[illegible] बाप कहते है अपने को आत्मा समझो। अभी तुम स्वदर्शनचक्रधारी [illegible] बने हो। कल से [illegible] तो जरूर आत्मअभिमानी कर्मातीत बनना चाहिये। नर से नारायण बनना है तो कर्मातीत अवस्था जरूर चाहिये। कोई कर्मबन्धन नही रहे तो भी सजा खानी पडे। बच्चे खुद भी समझते है याद की मेहनत बडी कडी है। युक्तिततो बहुत सहज है। सिर्फ बाप को यादकरना है। (भारत का प्राचीन राजयोग मशहूर है।) योग के लिये तो है नालेज।) जो बाप ही आकर सिखाते है। कृष्ण को फिर स्वदर्शन चक्र दे दिया है। वो भी तो चित्र कितना रांग है। अभी तो तुमको कोई चित्र आद भी याद नही करना है। सब कुछ भूलो। कोई मे भी बुधी नही जावे। लाईन क्लीयर चाहिये। यह है पढाई का समय। दुनियां को भूल अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना तब ही पाप नाश होगें। नगें आये थे अब फिर नगें है जाना है। बाप कहते है पहले-2 तुम्ही नगें आये हो। फिर तुमको ही जाना है। तुम आलराउंडर हो। वो तो होते है हद के ऐक्टर्स। तुम हो बेहद के। अभी तुम समझते हो हमने अनेक बार पार्ट बजाया है। अनेक बार तुम बेहद के मालिक बनते हो। इस बेहद के नाटक अन्दर फिर छोटे-2 नाटक भी अनेकों बार चलते ही रहते है। सत से कलयुग तक जो कुछ भी हुआ है वो रिपीट होता रहता है। (ऊपर से लेकर अन्त तक तुम्हारी बुधी मे है। (मूल सूक्ष्म और सृष्टी का चक्र बस।) और किसि धर्म से तुम्हारा काम नही है। तुम्हारा धर्म तो बहुत सुख देने वाला है। हर एक अपने धर्म को जानते है। बाप तो बच्चों का ही सुनाते है। और धर्म वालों को कोई पढाते है। उनका जब समय होगा तब वो आवेंगें। नम्बरवार जैसे-2 आते है वैसे है फिर जावेंगें भी। हम और धर्मों का क्या वर्णन करेंगें। तुमको तो सिर्फ सिर्फ एक बाप को याद करना है। चित्र आद भी सब भूल कर एक बाप को याद करना है। ब्र, वि, शं को भी नही। सिर्फ एक को। वो तो समझते है कि परमात्मा लिंग है। अब लिंग समान कोई वस्तु हो कैसे सकती है। वो भला ज्ञान भी कैसे सुनावेगी। क्या =से प्रेरणा से वो कोई लाऊडस्पीकर रखेंगें जिससे तुम सुनेंगें। प्रेरणा से तो कुछ होता नही है। ऐसे नही किसकर कोई प्रेरते है। यह सब ड्रामा मे पहले ही से नूंधहै। विनाश तो होने का है ही। जैसे तुम आतमा=ऐं आत्मा ये शरीर दवारा बात करती हो वैसे परमात्मा भी करते है। उनको तो पार्ट ही दिव्य और अलौकिक है। पतितों को पावन बनाने वाला एक ही बाप है। कहते है मेरा पार्ट भी सबसे न्यारा है। जो कल्प पहले आये होगें वो ही आते रहेगें। जो कुछ भी पास्ट हुआ सो ड्रामा। उसमे जरा भी फर्क नही। फिर पुरुषार्थ का ख्याल रखना है। ऐसे नही कि ड्रामा अनुसार हमारा कमपुरुषार्थ चलता है। फिर तो पद भी सारा कम हो जावेगा। पुरुषार्थ को तेज करना है। ड्रामा पर जोर नही देना है। अपने चार्ट को देखते रहो। बढाते रहो। नोट रखो। हमारा चार्ट बढता जाता है? बहुत खबरदारी चाहिये। यहां पर तो तुम्हारा है ब्राह्मणों का संग। बाहर मे तो सब है कुसंग। वो तो सब उल्टा ही सुनाते है। साधुओं आद से तो तुम सब उल्टा ही सुनते आये हो। अब बाप तुमको कुसंग से निकालते है। कोई भी फैशन आद की भी बात नही है। बाबा ने तो तुम बच्चों की सीध(चीर) भी सीधी निकलवाई थी। आजकल तो कैसे-2 बाल बनाते है। बाहर मे जाते है तो पहरवाश(पहनना) ही सारा बदल जाती है। यह तो जैसे कि अपने स्वीम की इनसल्ट करते है। देश, वेश ही बदल देते है। देहअभिमान हो जाता है। 50-100रूपये देते है सिर्फ बाल बनाने मे। इसको ही कहा जाता है अति देहअभिमान। वो फिर कब भी ज्ञान उठा नही सकते है। बाबा तो कहते है कि बिलकुल सिम्पल बनो। ऊंची साडी पहनने पर भी देहअभिमान आ जाता है। हमको तो पुलवाईल की साडी पडी हुई है। देहअभिमान को तोडने लिये सब हल्का कर देना चाहिये। कोई चीज देहअभिमान को लाती है। तो इस समय वनवास मे हो नां। हर चीज से मोह हटाना है। बहुत ही साधारन रहना है। शादी आद मे भी भले चले जाओ परन्तु तोड निभाने अर्थ। फिर घर मे आये तो सब उतार दिया। तुमको तो वानी से परे जाना है नां। वानप्रस्थी तो सफेद पोश मे होते है। तम ऐसे-2 छोटे को सब वानप्रस्थी हो। सतयुग मे तो इतने मनुष्य होगें ही नही। बाकी सब को जा[illegible] [illegible] अल्लजाओ

तो तुम सब वानप्रस्थी हो। छोटे बच्चो को भी शिव बाबा की ही याद दिलानी है।उसमें ही कल्याण है। अब तो बस हमको जाना है शिव बाबा पास।कृष्ण को याद करने पर विकर्म विनाश नही होंगें। छोटे २ बच्चे भी शिव बाबा शिव बाबा कहते रहते है। यही आदत डालनी चाहिये। उनको भी अच्छा लगेगा। क्योकि बहुत है जो यहां के गये हुये है। तो बाप बच्चो कहते रहते है कि कैसे भी हो देहअभिमान को तो जरूर छोडना है।कोई भी चीज का महत्व नही रहे। अपने को नगा समझना है। सम्बन्धियों से भी ममत्व तोडना है। बाबा की याद ही मोस्ट वैल्युबुल है। इसलिये ही भक्ति मार्ग में भी ब्राहमण लोग यात्रा करते है। स्नात्रोय तो बहुत है नां।चारों धामो के कितने मन्दिरो मे जाते है। जहां तहां माथा टेकते रहते है। पैसे रखते रहो। यहां पर तो वो बातें नही है। तुम बच्चो को बडी खुशी मे रहना चाहिये। तुम तो बहुत हाईक्लेस्ट इस्टुडण्ट हो। भगवान तुमको पढाते है। तो यह भी तो मनमनाभव हुआ नां। हम स्टुडण्टस है यह भी भूल जाते है। शादी किये हुये भी फिर पढते है। टीचर को याद करते है। ओना रहता है कि हम उन्नित को पावे। तुमको तो बहुत उन्नित की को पाना है। जास्ती हवश की भी दरकार नही है। यह तो सब खत्म होना है पहले अपने को पावन बना ले। सिर्फ पैसे दे देने से कुछ भी नही होता है। पैसे देंगें तो बीज बोवेंगें। परन्तु पावन तो बनना है नां। नही तो सजायें खानी पडेगी। ट्रिब्यूनल मे तो बाप भी बैठेंगें। फिर वहां पर सारा सा० होता है तो धर्मराज भी है नां। विटेनसी वाले भी होते है। कि नही तो केस चलेगा नही तो सजाये खाओगें।गर्भ जेल मे भी तो देखो आत्मायें कैसे सजा पाती है। बाहर से पता थोडेई पड़ता है। अन्दर मे तो कितना दुःख होता है। यहां तो कहीं ही जाता है गर्भ जेल। वहां तो गर्भ भी महल मे रहते हो। इस पर तो सुखदेव की कथा भी है। सुखदेव भी तुम्ही सब बनते हो। अभी हो दुःखदेव। देने वाले को देव कहा जाता है। दुःख देने वाले को तो देव भी नही कहेंगें।अभी तो तुम एक२ सुखदेव बन रहे हो।जब तुम सुखी रहते हो तब तुमको देवता कहा जाता है। तुम बच्चो को तो देह का अभिमान उडाना है। कदम२ पर सावधानी चाहिये। जास्ती तो पैसे भी क्या काम आवेंगें। बाबा ने बाबा ने अपना भी मिसाल बताया। समझा अब तो हमको अविनाशी कमाई करनी है।इन विनाशी पैसोंग का क्या करेंगें। फिर कितनी जल्दी इस कमाई मे लग गये। यहां पर तो तुम बच्चो को पैसो की कोई दरकार नही है। शिव बाबा के भण्डारे से खावेंगें। भूखे थोडेई मरेंगें। इसी कमाईमे लग जाना चाहिये। इससे फायदा बहुत होगा। कुमारियां फिर भी बन्धनमुक्त है। शादी की बच्चे पैदा किये तो फिर विकार मे भी गये तो याद की रग पढती ही जाती है। यहां पर तो सबकीही याद मिटानी है।युगल बनते है तो भी मुसीबत है। दूसरे की भी याद नये सिर खडी हो जाती है। वो मिटानी पडे। इसलिये कुमारियों के तो लिये बहुत अच्छा है। तुमको तो अविनाशी सर्जन मिला है वो तुमको हेल्दी ऐवर वेल्दी बनने की युक्ति बतावेंगें।सर्जन भी है तो टीचर भी है। आत्मा को ही इंजेक्शन लगता है। जिससे ही वो ऐवर हेल्दी बनते है।सिर्फ बाप को याद करना है। बाप आत्माओं को ही इंजेक्शन लगाते है मनमनाभव का। तो अमल मे लाना चाहिये नां। याद से ही विकर्म विनाश होंगें। मूल बात हैयह। इसलिये ही बाबा कहते है कि चार्ट रखो। याद से ही पाप कटते जावेंगें ज्योति जगती जावेगी। पत्थर बुधी से पारस बुधी बनने जा रहे हो। जिन्होने यह मेहनत कल्प पहलेकी है। वो ही अब भी करते रहेंगें। अब तुम जानते हो कि हमको अपने घर शान्तिःधाम मे जाना है। कोई गर्भ मे नही जाना है। मनुष्य समझते है कि एक शरीर छोड कर दूसरा लेना है। तुम तो अब समझते होकि हम घर चले जावेंगें। एक ही घर मे भी अनेक मते हो जाती है। बाप के लिये सुग युग तो स्त्री के लिये कलयुग है। वो हंस वो बगुला। फिर कितने झगडे हो पडते है। नथिंग न्यू। कल्प पहले भी हुआ था अब भी हो रहा है।पति के लिये संगम युग तो स्त्री के लिये कलयुग। यही लगा रहता है। लेकिन यह समय है ही इस कमाई का। गरीब तो अपनी दाल रोटी मे ही खुश रहते है। तुमको पढाई ... कमाई करनी है। ओम